divinepramilabhagwan.com

दादा भगवान

गुरु को समर्पित
प्रार्थना रूपि निश्चय की निधि

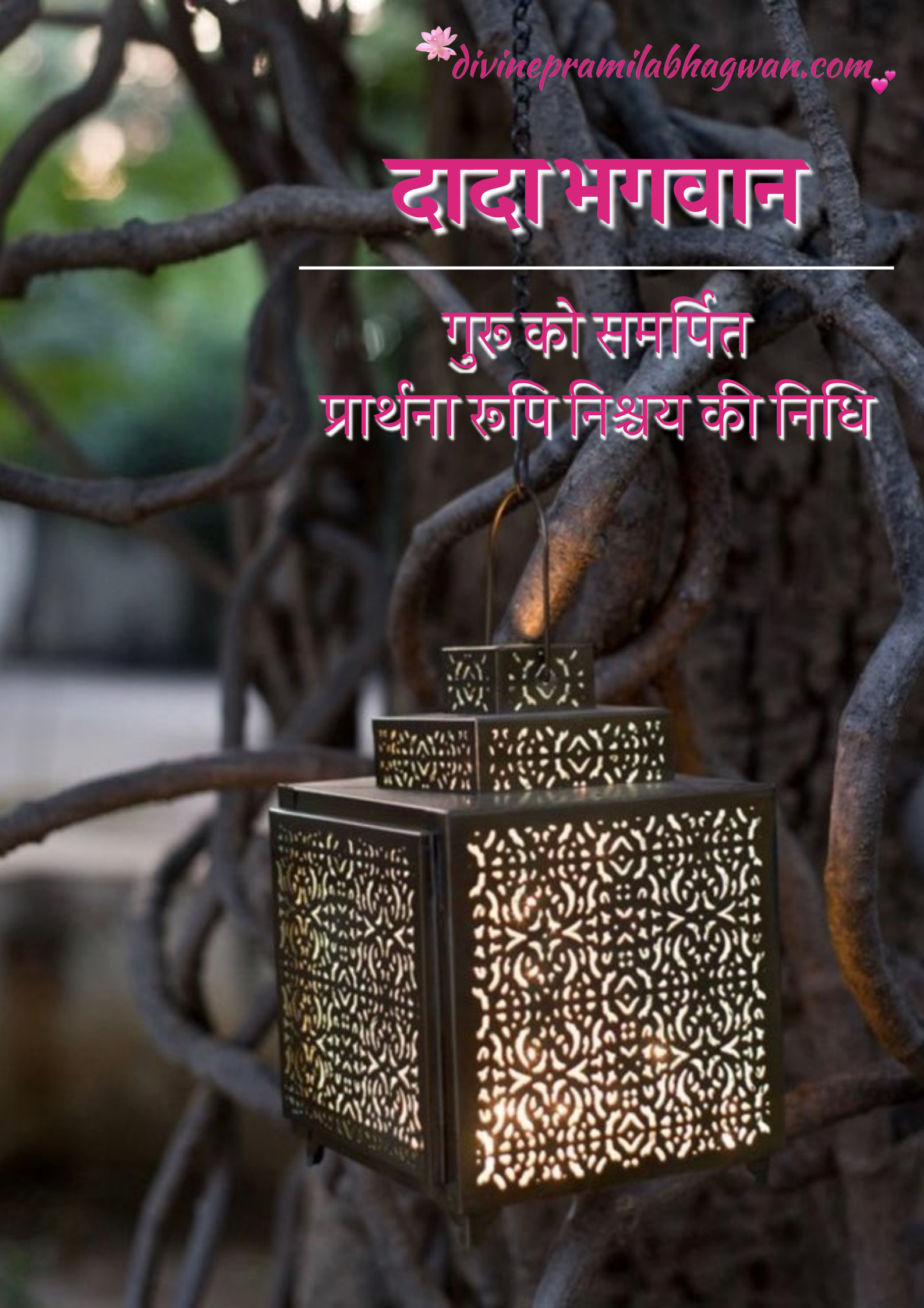

दादा भगवान

गुरु को समर्पित प्रार्थना रुपि निश्चय की निधि

हे सतगुरु हे ईश्वर हे अविनाशी आत्मा हे वसुदेव सर्व। अब मुझे यहाँ वहाँ एक ही परमात्मा देखने मे आता है। तेरे सिवाए कुछ है ही नही। तुमने नाम रुप के वस्त्र धारण करके अपने को छुपाकर जगत को साकार रुप में मोहित किया है और नम्रता भी इतनी कि हमेशा हम से ऐसे कहते थे कि हमें तू करके बुलाओ। रिश्तेदारों से समझ लेकर मैंने उल्टे रस्ते अपनाए, अब गुरु मुख से नया जीवन प्राप्त करके सच्ची समझ को लेकर जागती ज्योत का प्रकाश अपने अंदर मे करके अपने जड़ स्वरुप को भुला रहा हूँ कि "मैं ना"। 'हऊमै' दीर्घ रोग को छोड़ आरोगी आत्मा में स्थित हूँ। देह का भान भुलाकर, अकर्ता मुक्ति की प्राप्ति होने पर अब तुम्हारे साथ समझौता किया है कि प्रारब्ध अनुसार जो कुछ हो रहा है उसे सिर आँखों पर रखता हूँ। कभी भूलकर भी असंतुष्ट नही होऊँगा। "जो तुध भावे साई भली कार"!! नाराज़ मुझे कभी भी कोई भी नही देखेगा। वाह: वाह: भूलता नही सतनाम आरसी है। मोह छोड़कर सबको मैंने प्रेम की नज़र से देखा है। इच्छा, चाहना, कामना सब समाप्त हो गई, इसलिए चिंता भी नही है। "चाह गई चिंता मिटी, मन हुआ बेपरवाह।" क्योंकि ईश्वर इच्छा से सब हो रहा है। भगवान तेरी इच्छा चले मेरी इच्छा नही। क्रोध केवल मन को मारने में लगाया है। तो मन अब अमन हो गया। लोभ दिन रात सत्संग का रखा है। वक्त को बचा कर घर की ज़रूरत पूरी कर के सत्संग की तरफ़ भागता हूँ। गुरु के ज्ञान से अज्ञान नाश हो गया है। सच्चे ज्ञान को सुनने से अब जगत के बदले जगदीश भांस रहा है। माया की चमक अब हमको रुकावट नही डालती है। नाशवंत पदार्थ माया का खेल समझ कर सपना समझता हूँ। घट घट वासी सर्वव्यापक समझने से डर छोड़कर निर्भय हो गया हूँ। जुदाई का भरम निकल गया है। एकता का मज़ा ले रहा हूँ। समता समभाव समदृष्टि की एकाग्रता में अकेला हूँ। साक्षी भाव से डर, दुःख, सुख, पाप, पुण्य से मुक्त हूँ।

अब मुझे यहाँ-वहाँ एक ही परमात्मा देखने मे आता है। तेरे सिवाए कुछ है ही नही।

प्रारब्ध अनुसार जो कुछ हो रहा है उसे सिर आँखों पर रखता हूँ। कभी भूलकर भी असंतुष्ट नही होऊँगा। ... नाराज़ मुझे कभी भी कोई भी नही देखेगा।

ओम् सतगुरु प्रसाद

अब पता चला के तुझमे मुझमें आदि से जुदाई नही है।

इस अक्षर के अर्थ में जब पशु पक्षी भी मस्ताने हो जाते हैं तो मैं जो आनंद ले रहा हूँ वह अवर्णनीय है। इसे मैं बता नही सकता। ओम् को भुलाने से हम रोगों से परेशान थे। अब पता चला के तुझमे मुझमें आदि से जुदाई नही है। हम कभी मंदिर में कभी मस्जिद में तुमको ढूँढते थे क्योंकि कुसंग में या रिश्तेदारों में हम तुम्हें भूल गए थे पर अब जब

"पूरा सतगुरु भेटेया पूरी हुई युक्त पीछे हसंदेयाँ, खेलंदेयाँ, खावनदेयाँ विचाँ होवे मुक्त"

अब वासुदेव को जहां तहां देखते हुए शरीर की निर्बलता चली गयी है। अब तो आत्म बल से ब्रह्म हत्या के पाप से बच गया हूँ। विवेक विचार गुरु से लेकर नित अभ्यास, नित वैराग्य में वक़्त व्यतीत कर था हूँ। हमको कुछ भी नही चाहिए। मरने वाले मुर्दों का साथ छोड़कर अविनाशी आत्मा का सहारा लिया है।

पुरुषार्थ से ही परमात्मा मिलता है और प्रारब्ध अनुसार दुनिया के पदार्थ अपने समय पर मिलते हैं।

ये सिर अगर गुरु को ना देता तो काल आ के ले जाता। अब तो हो गया अमर क्योंकि अजन्मा से प्रीति हो गयी। भावी पर विश्वास आने से संतोषी स्वभाव बन गया है। पुरुषार्थ से ही परमात्मा मिलता है और प्रारब्ध अनुसार दुनिया के पदार्थ अपने समय पर मिलते हैं। सुख दुःख शरीर पर लगते हैं और वक़्त आ के चले भी जाते हैं। मैं साक्षी दृष्टा हूँ।

ज़ुबान की मौन देवता और मन की मौन भगवान बनाता है। दुखों को हटाने की कोशिश कर रहा था पर गुरु के ज्ञान ने अज्ञान नाश कर दिया। जिस अज्ञान के कारण दुःख समझ मे नही आता था अब तो उन दुखों सहित यह शरीर भूल गया हूँ। मैं अंधा भी नही था पर अपने दोषों पर पर्दा डाल कर अंधा हो गया था। अब वैराग्य समझ कर ज्ञान लेकर जीवन मुक्ति का मज़ा ले रहा हूँ।

- ओम् 💕